Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma (2010). Major waterborne diseases in Rajasthan Literature. *International Journal of Economic Perspectives*, 4(1), 49-54.

Retrieved from: https://ijeponline.org/index.php/journal/article

jktLFkku e ie[k tytfur jkx

Hemlata, research scholar, Singhania University, pacheri bari, jhunjhunu

Dr. Mukesh kumar sharma, research supervisior, Singhania University, pacheri bari, jhunjhunu

ifjp; %

jktLFkku e tytfur jkxk d leg e vekckbfll] eyfj;k] Vk;QkbM rFkk ok;jy giVkbfVl ie[k gA jktLFkku e bu ie[k tytfur jkxk dk fooj.k iLrr dju gr bu jkxk l eju oky jkfx;k dh l[;k dk lTHkkxh; forj.k 5 वर्षो का प्रदर्शित किया है। इन आंकड़ों के संकलन तथा प्रस्तुतीकरण से संभागीय तुलना राजस्थान राज्य में स्वतः ही प्रदर्शित हो जाती है। इस संदर्भ में आंकड़ो के आधर पर यह पाया कि jktLFkku jkT; d lHkh lHkkx ie[k tytfur jkx gtk l eDr gA ;g ,d cgr gh egRoi.k rF; gA jktLFkku e tytfur ie[k pkj fcekfj;k dk] ftud vkdM ge LokLF; foHkkx t;ij l ikIr g,] mUgh fcekfj;k dk fuEu idkj l jkxkulkj fooj.k iLrr dj jg gA

संक्रमी यकृत भाोथ रोग :

इस रोग के वर्ष भर किसी भी ऋतु या महीने e bld jkxh ik; tkr gA bl jkx के सम्बंध में यह मुख्यतः पाया गया है कि इस रोग के रोगियों की संख्या अधिक वर्षा अवधि के दौरान पायी जाती है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि वर्षा ऋतु में अन्य _rvk dh vi{kk ;g jkx vf/kd ik;k tkrk gA v0;ofLथत एवं सेनिटेशन व्यवस्था जो vUrr% ekuo cLrh d gj ?kj ;k ifjokj l lEcfU/kr gkrh gA bl jkx d Qyu dk एक महत्त्वपूर्ण कारण है। इसके साथ ही यह रोग सघन जनसंख्या वाले बस्तियों में एक जलजनित जनपादिक रोग के रुप में शीध्र ही फैलता है। अतः यह भी एक सहयोगh dkjd है। इसलिए जब तक स्वच्छता स्तर के मानदण्डों को नहीं अपनाते हैं, जिसमें सेनिटेशन 0;oLFkk dk l/kkj cgrj gkuk ie[k gA

इस रोग के सम्बंध में यह कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा में इस रोग को संक्रमी ;dr शोथ कहते हैं। पीलिया इसका समान्यतः बहुचर्चित शब्द gA bl deyk jkx ;k जायन्डिस नाम से भी जाना जाता है। यह एक हैपेटाइटिस नाम के विषाणु या वाइरस से

© 2010 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma

Submitted: 27 Oct 2010, Revised: 09 November 2010, Accepted: 18 November 2010

gkrk gA blfy, fpfdRlk foKku e bl ok;jy giVkbfVl uke l tkuk tkrk gA हैपेटाइटिस का तात्पर्य यकृत होता है, अतः यह एक विषाणु द्वारा मानव शरीर में लीवर ;k यकृत को सवंमित करते हुए संक्रमी यकृत शोथ रोग फैलता है। हैपेटाइटिस के विषाणु 6 idkj d gkr g&ftUg ,] ch] lh] Mh] b ,o th uke l tkuk tkrk g] ;g jkx mu lHkh e l fdlh Hkh ,d idkj d ok;jl l iHkkfor gk ldrk gA bu 6 e l fdlh Hkh ,d प्रकार के विषाणु स्वस्थ यकृत को कुप्रभावित करते हैं तथा इन प्रकार के वाइरस l bl jkx d Qyu d rjhd Hkh fHkUu&fHkUu gkr gA

सामान्यतः हैपेटाइटिस ए वायरस के द्वारा संक्रमी यकृत शोथ रोग ज्यादातर फैलता है। जहाँ तक इस रोग के भौगोलिक वितरण का प्रश्न है] Hkkjr e ok;jy giVkbfVl *Mh(ftl MYVk ok;jl Hkh dgr g ugh ik;k tkrk gA vr% ihN d ikp idkj d हैपेटाइटिस के वायरस पाये जाते हैं। यदि विश्व स्तर पर यह बहुत बड़ी बीमारी के रुप में ugh ekuk tkrk g] ijUr tgk ij Hkh ;g jkx ik;k tkrk g Hkkxkfyd #i l cg r प्रभावी रहता है। इसलिए भारत में लगभग 40 लख व्यक्ति प्रतिवर्ष हैपेटाइटिस रोग से lofer gkr gA

eyfj;k jksx %

विश्व में मलेरिया रोग लगभग एक शताब्दी पूर्व अपने आप में एक रहस्य बना हुआ FkkA oKkfudk d fy, ;g jkx dgk l vk;k] fdld }kjk vk;k rFkk bldk ilkj dl होता है। अपने आप में एक चुनौति थी। लगभग 100 वर्ष पूर्व ब्रिटिश सैना के अनेक lfud vÝhdk egk}hi d ?ku yxyk e Ql x; FkA ml le; Hkkjr dh rjg vud देशों पर अंग्रेजों का साम्राज्य था और ब्रिटिश सेना व नागरिकों का यूरksi l Hkkjr e xkok तथा कलकत्ता बन्दरगाहो से आवागम हुआ करता था। अफ्रीका में अनेक ब्रिटिश नागरिक एक विशेष प्रकार के रोग से कुप्रभावित हुए, जिसमें लगभग 7 से 10 दिनों तक रूक–रूक कर तेज बुखार का आना, फिर बन्द हो जाना तथा पसीने आना, फिर कुछ दिनों पश्चkr शरीर में कंपकंपी आना या शरीर का टूटना तथा साथ ही उल्टी आना और फिर शरीर एक दम शक्तिहीन होना, ये सभी इस रोग के लक्षण हैं। इसके पश्चात् ब्रिटिश वैज्ञानिक ने vÝhdk e bl jkx l xflr jkfx;k dh tkp iMrky ikjEHk dhA bl nkjku mUgku ;g ik;k कि एक विशेष प्रकार का मच्छर जिन व्यक्तियों को काटता है, वो ही इस रोग से

© 2010 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma

Submitted: 27 Oct 2010, Revised: 09 November 2010, Accepted: 18 November 2010

xfLr gkr gA oKkfudk u ,l ePNj dk ,tukTyht uke fn;kA mlе Hkh ;g jkx विशेषतः मादा मच्छर के काटने से ही होता है। इन्होंने मादा मच्छर के रक्त को सूक्ष्मदर्शी ;= ¼ekbØkLdki½ e n[kk] rk ;g ik;k x;k fd eyfj;k ijthoh ,d cDVhfj;k ftl bUgksu lykTekfM;e okboDl uke fn;kA ;g cDVhfj;k ik;k rk ePNjk e tkrk g] परन्तु यह बैक्टीरिया अपना आधा जीवनचक्र मनुष्य के यकृत में पूरा करता है। अतः जब मादा एनोज़्लीज मच्छर मनुष्य को काटती है तो यह बैक्टीरिया मनुष्य के रक्त में पहुँच जाता है और शरीर में रक्त के साथ प्रवाहित होकर यकृत में पहुँच जाता है तथा यकृत में ;g cDVhfj;k djkMk dh l[;k e viuh of) djrk gA ;g Øe 7 l 10 fnu e ijk gk tkrk gA fQj ;g cDVhfj;k ;dr l djkMk dh l[;k e ,d lkFk iuu jDr e प्रवेश करते हैं। इससे मनुष्य के शरीर का तापमान एकदम गिर जाता है और मनुष्य को कंपकंपी होती है और पसीना आता है। तत्पश्चात् उल्टी होती है। इस प्रकार से ये मलेरिया के परजीवी बैक्टीरिया मनुष्य के पूरे शरीर में फैल जात gA

oKkfudk u vuql/kku l ;g ik;k fd ; ePNj dgh Hkh fLFkj ty dh lrg ij mRiUu gkr gA bl idkj l ;g ,d tytfur jkx d vUrxr j[kk x;k gA ty एक प्रमुख भौगोलिक एवं जलवायु तत्व है। मनुष्य के शरीर में यह बैक्टीरिया अधिक दिनों rd jgr g] rk मानव के समूचे शरीर में फैल जाते हैं तथा मानव शरीर की कोशिकाएं diHkkfor gkdj eju yxrh g vkj fLFkfr vfu;f=r gk tku d dkj.k jkxh eR; dk iklr gk tkr gA oKkfudk u vÝhdk e ik; tku oky fludkuk uked o{k dh Nky dk f?kl dj ,l jkगियों को पिलाई, तो यह पाया कि मानव शरीर में परजीवी मलेरिया समाप्त हो जाते हैं और वैज्ञानिकों ने इसे कुनेन शद से सम्बोधित किया जो अन्त में इस रोग को नियन्त्रित करने की औषधि कहलाई। जब कोई मच्छर ऐसे रोगी को काटता है। ftle eyfj;k cDVhfj;k प्रचुर मात्रा में होते हैं तथा उन्हें लेकर वह अन्य स्वस्थ्य मनुष्य के शरीर में प्रवेश करा देता है। जिससे उसे भी 7 से 10 दिन के भीतर यह रोग हो जाता gA

इससे वैज्ञानिकों ने यह पाया कि मच्छर इस रोग को एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में फैलाने dk lk/ku gA bl idkj l eyfj;k dk ijthoh cDVhfj;k vk/kk thou ePNj d आमाशय के भीतर तथा शेष आधा जीवन चक्र मनुष्य के यमृत अंग में पूरा कर लेता है।

© 2010 by The Author(s). (cc) BY ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
***Corresponding author*:** Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma
Submitted: 27 Oct 2010, Revised: 09 November 2010, Accepted: 18 November 2010

blfy, oKkfudk u ;g ekuk fd ;fn blI jkx dk fu;f=r djuk g rk tgk dgh Hkh ty bDVBk gkdj fLFkj jgrk g rk mu LFkkuk dh lQkb j[kh tk;] ,I ikuh e djkflu dh dN cn Mkyh tkrh g rk og ijr d #i e ,I fLFkr ikuh ij Qy tkrk g rFkk blI ftru Hkh ePNj rFkk mld ykok bR;kfn lekIr gk tkr gA

rkfydk jktLFkku e eyfj;k I vkIr eR;q nj ¼2006&2010½

Øekd	lHkkx	vkIr eR;q	प्रतिशत
01	chdkuj	28	22-95
02	tk/kiqj	23	18-85
03	vtej	21	17-21
04	t;iqj	19	15-57
05	dkVk	14	11-48
06	Hkjriqj	09	7-38
07	mn;iqj	08	6-56
dqy ;kx		122	100

L=kr% fpfdRlk] LokLF; ,o ifjokj dY;k foHkkx] t;iqj

Rkfydk से संभागों के अनुसार मलेरिया रोग से मरने वाले रोगियों की पाँच वर्षीय औसत संख्या को प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा इस सन्दर्भ में संभागीय प्रतिशत ;kxnku Hkh iLrr fd;k x;k gA bl rkfydk I ge lHkkxh; ryukRed v/;;u Hkh iklr gk tkrk gA jktLFkku d 7 lHkkxk e bl jkx I eju oky jkfx;k dh l[;k lcl de mn;iqj lHkkx dh jgh] tk ek= 6-56 प्रतिशत से अपना योगदान करता है। bldk vulj.k djr g, Hkjriqj lHkkx lcl de ;kxnku e 7-38 प्रतिशत से छठे LFkku ij vkrk gA ;g nkuk lHkkx ok g tgk ij fuR;okgh ufn;k cgrh gA blfy, प्रवाहित होने वाले पानी पर मच्छरों की उत्पत्ति कम होती है। इस रोग से मरने वाले jkfx;k dh l[;k e chdkuj lHkkx iFke LFkku ij vkrk g rFkk 22-95 प्रतिशत से अपना योगदान करता है। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते है fd chdkuj lHkkx e इंन्दिरा गाँधी नहर की अनेक शाखाएं इस संभाग के अनेक स्थानों पर टूटी हुई होने से ;gk fLFkj ty lykfor {k= Qy tkr g rFkk mu ij bl idkj d jkx d ePNjk dh

© 2010 by The Author(s). (cc) BY ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma
Submitted: 27 Oct 2010, Revised: 09 November 2010, Accepted: 18 November 2010

उत्पत्ति d L=kr cu tkr gA lokf/kd e tk/kij lHkkx jktLFkku e nlj LFkku ij vkrk g rFkk 18-85 प्रतिशत से इस रोग से मरने वाले रोगियों की संख्या में अपना ;kxnku djrk gA ;g lHkkx Hkfexr ty L=krk dh i;ty 0;oLFkk ij fuHkj gA bl संभाग में अधिक प्रतिशत होने का कारण यह है कि वर्षा के पश्चात् संभाग में vud LFkkuk ij NkV&NkV fLFkj ty {k=k dk forfjr gkuk gA bl rkfydk d vulkj vtej lHkkx o t;ij lHkkx d eju oky jkfx;k dh l[;k e eyfj;k l jkfx;k dh l[;k lokf/kd jkT; e rhlj o pkFk LFkku ij viuk ;kxnku djr gA

tytfur jkxk e eR;q dh fLFkfr %

Rkfydk में पाँच वर्षों (2006 से 2010) प्रमुख्या जलजनित बिमारियों के अनुसार jktLFkku e bul eju oky jkfx;k dh l[;k rFkk jkT; e chekjh d vulkj budk अलग–अलग प्रतिशत योगदान कितना है, यह दर्शाया गया है। प्रत्येक प्रमुख्या tytfur chekjh l eju oky jkfx;k dh l[;k e jkT; d 7 lHkkxk dk dy ;kxnku curk g] इस तालिका में प्रतिशत योगदान के रुप में दर्शाया गया है।

lnHk xUFk lph

1- vxoky ,u-,y-¼1997½ % Hkkjrh; df"k dk vFkr=] jktLFkku fgUnh xUFk vdknehj] t;iqj
2- vyh ekgEen ¼1990½ % df"k mRikndrk d Lrj e iknf'kd vlrqyu
3- ,LVku] t- vkj ,l- t- jkxl ¼1997½ % bdkukfed pUt ,.M ,xhdYpj] ,Mhuox & vkfyoj ,.M ck;M
4- c?ky] efgiky flg o jkekrkj ikjoky¼1999½ % vk/kfud df"k विज्ञान, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर
5- Hkjkjk] ,y-ih- ,DlVk vky¼1999½ % lelkfl;k&,xhdYpj pUt एज ए रीजल्ट ऑफ इन्ट रोडम्स ऑफ इरिगेशन ए डेजर्ट रीजन ,ykyl vkQ ,fjM tku Vol. 13 i- 1-10
6- cdfgy] ih-lh -¼1997½ % ^^,xhdYpj ikWyel vkQ bfM;k** fodkl ifCydsa'kUl ubl fnYyh

© 2010 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma
Submitted: 27 Oct 2010, Revised: 09 November 2010, Accepted: 18 November 2010

7- pkSgku] Vh-,l- ¼1987½ % ,xzhdYpj T;kxzkQh] , LVMh vkQ राजस्थान, स्टेट एकेडमिक पब्लिशर्स, जयपुर

8- pkSgku] ,l-ih- ¼1987½ % ^^df"k Hkwxksy jktLFkku jkT; dk v/;;u**

9- pVthZ] ,l-ih- ¼1994½ % gkoMk ftys dk df"k Hkwfe mi;ksx losZ{k.k

10-xqtZj] vkj- dS-(1997) : इरीगेशन फोर एग्रीकल्चर माडनाईजेशन, साईन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर

11-xgyksr] tS- ,l- ¼1994½ % jktLFkku dk lkekftd thou] fgUnh lkfgR; efUnj] tks/kiqj

12-xkSM+ oUnuk¼1996½ % ,xzhdYpj ikbZl ikfylh bu bfM;k] jkdk प्रकाशन, इलाहाबाद

13-xqIrk] ih-,y- ¼1990½ % t;iqj ftys ds iohZ Hkkx esa df"k dk vk/kqfudhdj.k ,oa fodkl] ,e-fQy-थिसिस राजस्थान विश्वविद्यालय, t;iqj

14-gqlSu] ekftn¼1996½ % fLVefVd ,xzhdYpj T;kxzkQh] jkor पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली

© 2010 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Hemlata and Dr. Mukesh kumar sharma

Submitted: 27 Oct 2010, Revised: 09 November 2010, Accepted: 18 November 2010